श्रीरंग

भाषाएं मनुहारों की	लड़की
बात चली बस्ती में त्यौहारों की। चहल–पहल गलियों में रोशनी बढ़ी बंसवट की बांह थाम बेल फिर चढ़ी चर्चा में खुश्बू है कचनारों की पोर–पोर महक उठी अमराई की आहट फिर साथ हुई परछाईं की भाषाएं आंखों की मनुहारों की।	युग बदला पर अभी आंख में खटक रही है लड़की गहराई तो सूरज ने सब पानी सोखा लहराई तो किया समय ने इससे धोखा खुली सतह पर पपड़ी बनकर चटक रही है लड़की बचपन में तो सभी खेलाया करते थे कच्चे केश सभी सहलाया करते थे बड़ी हुई तो तश्वीरों संग भटक रही है लड़की मिले योग्य वर कितने व्रत उपवास किए पीपल बरगद पूजे, बारे लाख दिए फिर भी कुण्डलियों पर आकर अटक रही है लड़की भाग्य और व्यक्तित्व हुआ सब काष्ठ–खिलौना तोहफे में जो मिला हुआ वह अग्नि–बिछौना हीन भाग्य के आगे माथा पटक रही है लड़की।
('नये–पुराने' गीत अंक–5, 1999 से साभार)	सम्पर्क– 1, पोनप्पा रोड द्रोपदी घाट इलाहाबाद